

चौनक



रुद्र

२ माह जिमि वगति मत्रा कथामत्रा न दूचु व पाव न । जे क न
॥ स के ६ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



1803

ॐ नमः ४ धीगुच वनमः ॥ धीसुब्रह्मये नमः ॥ यद्यप्यहं न सावित्र्यं ॐ लोका विप्रः
नियता नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
नाना यनमस्तु नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
॥ ॥ अथिहो वमिदं नाना नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
हागुरुं ॥ २ ॥ निधय नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः

सुखदय्यामि नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
॥ ॥ श्रामनूय नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
कशना ॥ ॥ मूलसुखं यदय्यामि नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
वृत्त्यं वदन् नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः
यदय्यामि नाना लक्ष्म्यं वदन् नाना निमित्तं समुच्चयः ॥ १ ॥ ॐ लोका विप्रः ॐ लोका विप्रः

(यं सूर्यः ॥ ॥ मूर्खजिह्वा यदक्षत दृष्टं ह त्रालन द्वादिभिरासंयुयागनः
 यद्विनाशवसीतदिभा ॥ मूर्खजिह्वानि स न दय दक्ष विद्यमानं व कचविह्वी वः
 का वरुन नियके मग्न व च्याल विग्रह न ह्याका गुरुहि न मग्न व धनं यल द्वावः
 स्नानि शलं स न अर्गे ले स के न वं व श्रु ॥ ॥ गुलिहि ४ सुरु संयुक्त यद्विने सः
 हं सं कथा कुलिहि सुरु मिह्वी के द्वा ली ना व संगति ॥ ॥ य संग या य शलं गुलि
 क क्रेडा खं द्वा य शल सा स्नानि क्रेडा मिह्वी सज्जने या य शल सा कुल व न क्रेडा य
 कचसूर

(यं या क क्रेडा न मरु ॥ ॥ ड मरु नां उजंगा नां मद्यया लं च दनितां श्री नां राजः
 कलानां च विध्वंसि निगना यूया ॥ ॥ का यडा विडा धन का व क्रेडा मुडा राजा
 डा या स या य मग्न व धनं सडा विष्वा स या ग द्वा व धनं या आ यू व मा क स या ॥ ॥
 वनिनां सुरु विष्वा सं ज्ञान व ४ क उ मि क्क नि स ह का गुरु स ननु ययिन ४ य निवः
 क्षनि ॥ ॥ गा गान र वू य वू य न ४ क डा विष्वा स या य व लं डा क्रे या सि मा धा स क्रे ल व
 व (यं) सि मान का नि द व क्रे ल न वा यू व ॥ ॥ धन धान्य यथा गुरु विद्या सं ग्रह न

मूत्राश्राहवैद्यवह्नमूत्रकनकासदाहवह्नः॥१॥ धनसहस्रयायसुवाक्का
 कायसविद्यासनसुवाह्नवह्नयायसुनयसुंधकनकासुवाह्नमाह॥ ॥नगुत्रः
 ४सदृशीमाणा नगुत्रः ४सदृशीयिना। यस्मात्त्रिमहोद्योतं ससात्रदधिदृष्टं॥॥
 (गानमूत्रयूषयामामयासिनं ववूयासिनं गुत्रुडयत्राकसुनंठमद्दृष्टं ससा
 त्रयालयाचरुवा॥ ॥मागागंगसमीतीर्थयिनायूक्तमभवत्। गुत्रुकदात्रसमा
 तीर्थमागागंगायूनः ४यूनः॥॥॥ (गानमूत्रयूषयामामयासिनं तीर्थगंगाना। र्थववूशः
 यः॥

लं मूक्तनतीर्थं गुत्रुशलं कदात्रयातीर्थं (मामशलं उयउयगंगाना। र्थः
 ॥ ॥ विद्यात्रयं कूत्रयानां क्रमात्रयं तपश्चिनी। काकिलानां स्वनत्रयं नात्रीत्रयं यः
 निवृत्ता॥॥ ॥ शाकूत्रयमनूषयात्रयशलसा विद्यातपश्चिदकायात्रयशलं क्रमाकाकि
 लयात्रयशलं सात्रययात्रयशलं यनिवृत्ता॥ ॥ नत्रविद्यासमावधू नत्रयाः
 भिसमात्रियानत्रयायत्यसमस्तं हा नत्रदद्यायनं वलं॥॥ ॥ ॥ सज्जनशलसा विद्याउ
 उत्यमयूषयंशलसा व्याधिवोउत्यमयू सनहाशलसा कायः ॥ ॥ चडाउत्यमयू

वेत्रिशूलविभागाडाडल्यमयू॥ ॥ विद्यायवाहिनामिगुं राय्यामिगुं गुरुत्रया
 अडनमो यधिमिगुं धर्ममिगुं यत्रयत्रा॥१४॥ यत्रदशयामिगुरुलसा विद्या कयामि
 गुरुलसा सुलाययामिगुरुसा वासल यलोने कयामिगुरुलसा धर्मयाया॥ ॥
 दूनामिगुं विषं विद्या अजिर्षु रोजने विषं विषं गमिद विदयं रज्ज्वेन नूला
 विषं॥१५॥ नाकाल अस्या समयागदाव स्या विद्या विषं रूत अजिर्षु रज्ज्वेन
 नया अन्न विषं रूत धमना सन रज्ज्वेन गमिनि गमि विषं रूत का ० रज्ज्वेन

ल्यासकलानविषययूव॥ ॥ अनास्थासहनाविद्या नित्यरुस्येहनामुया कूवी
 ऊर्नरुनदगं सत्यदायैरुनानृप॥ ॥ ६॥ अस्यासमयागदाव सयाविद्यांरुलशरूव
 वलकालमदयकंरुललदाव सुखंरुलशयूव मरिंदयसाहललदाव वरुललशयू
 वरुनविनमहिनदाव वाजारुलशयूव॥ ॥ यस्ययूगनविद्यांसा नसुनानच
 यल्लिगा अश्वकालकूलनस्य नश्चलवसर्वलि॥ ॥ ७॥ गानशूयूयया काययनिः
 णामुमसलदाव सुलमशलदाव ग्यानिमशलदाव ध्याकूलवागीसचलमाम

धर्म २

[illegible]

३१

[illegible]

इति श्रीवैद्यनाथजीव

उयनकुलालयन॥२३॥कायभाचधवसुखनकुलकावअनगदावदवूवकागा
 लयावतलकावअनगगुलदयितधननकायशुलसुनंनिशुलसुनंकागाल
 यमाला॥धवसुखनसुनंनकमनवा॥॥अवित्रयासयास्यानांयुग्मायांकिंयया
 जनानांवहीयदिनस्यानांयुग्मायांकिंययाजन॥२३॥गानखयनूययाकायय
 निविद्यासनसलसुनसाअस्यासयागदावधयायुग्मावकवाधनयवूवक
 वाविद्यामसवयाधयावूद्धिदिनशूव॥॥युगमुविचिधनमुनियया

५

एतनंदधानिस्त्रिभुवद्विसंयन्नाहवकिखनूयुजिगा॥२४॥अनिलाकनकायः
 काजत्रयगमुकायगमुसलकावलाकसमसुसुनंमान्ययावूव॥॥य०य
 गकिमालस्यमयधाराववाहकाय०सुयुजिगावाजाय०युगदिनदिन॥२५॥चाः
 नकममिर्षधवकायकावअलासुशुनमनवगमुसुनकायधकावकावगमु
 मसलकावहविद्याशयावकूययमालवूवगमुसुनकाववाजानंयुजनंमान्यः
 यावूवदिनयानंअस्यासयाव॥॥गुलस्युकिंययाजलकिमानायययाजन॥

विक्रियननघंभरिगावः दोनविवर्जित॥२३॥गुणस्यकयाकृतं नलिकनजाय
वक्तुप्रथाजनघं०नकाषायकानदृष्ट्वायमदसामूलमवाद॥ ॥ननय्याह
नलिनूयं नूयय्याह नलिंगुणगुणय्याह नलिरूपां नूयय्याह नलिकमा॥२४॥मनश्च
या आरुनलशुलसा नूय नूयया आरुनलशुलं गुणगुणया आरुनलशुलं म्यानः
ग्यानया आरुनलशुलं कमा॥ ॥गुणयुक्तसिमानूयं नूयैयुक्तसिमाकूलं सि
द्धियुक्तसिमाविद्याशागयुक्तसिमाधनं॥२५॥नूयमखनयय गुणस्यकनकूल

॥ल२

मखनयय गिलहिनकन विद्यामखनयय सिद्धियदुत धनमखनयय द
रुक्तकयादुत॥ ॥अगुणस्यरुगां नूयं अगिलस्यरुतं कूलं अमिद्धिं रूगाः
विद्या अरुगां नूयं धनं॥२६॥गुणमदतकाव नूयखं रीलशयिव गिलमरित
काव कूलखं रीलशूव अमिद्धिशुलकाव विद्याखं रीलशयिव दुरुक्तकाम
दतकाव धनखं रीलशूव॥ ॥गुणरूपायन नूयं गिलरूपायन कूलं
सिद्धिरूपायन विद्याशागरूपायन धनं॥२७॥नूयया आरुनलशुलसा गुणः

कूलया आरुत्रलशुलसा गित विद्याया आरुत्रलशुल सिद्धि धनया आरुत्रलशुलः
 लंदरुडुकयाया ॥ सुकूलया जयंकया युगविद्यासूया जयगावणनया जः
 यच्छु मिगुधमनिथा जयगा ॥ ३१ ॥ अत्रापि विद्यशुलसा कूलवर्कश्रयागं विद्यः
 कायदूरि यशुलसा विद्यासुवर्कयाकं पंक्तया जलपशुलसा आयदास मिगुथ
 जलपशुलसा धर्मसखसा ॥ ॥ नायुत्रगिरिवामनू नास्मिनी चालं सनं लोचव
 सायसहायातां नास्मियालं महादधि ॥ ३२ ॥ उपाययागं वावभलूयचनं डचम
 मंत्र

शव पागालं काहावमखू सागलसमूदया लयालया यजितवरव धनार्थनरुनिल
 कनडजागयायमाला ॥ ॥ एतकेन चतद्वनं यादने काक्षनेन वा अर्वादि
 वसंकया दानाश्चयनकर्मसु ॥ ३३ ॥ अक्षिदुनदिनयति दूहावल वाव सायनः
 कयूतंगकया दक्षि आखल तंगकया नयायशुलसा क्रिने अस्माद्विनेगाक अक्षि
 दुनदिनयति यायमाला ॥ ॥ थाठनातां सरुमालि वक्रयास्मिपिपिलिका अगः
 क्वेनगाजायि यदमकं तंगचुति ॥ ३४ ॥ असमवृथं वाव सायादिनिदवदि

लोतमनालस्यं यादिसंमिगुसंगहा जूचीनरुननविद्या पञ्चनञ्जयानिधि॥३॥
निलैकेमियाद्यायाललाहाकलमियाद्यायालज्जलासुशयमननसाभूजनवामिः
उयायमालगामुसयकमालध्वनातखनसूयंमायमदू अकयहउत्रथी॥ ॥
नहिजननिश्चकृत्तं कृत्तंगुणामुद्यनगुणगुणतत्रंजातिययादधिद्युनंयथा॥४॥
जननकृष्णयमदू कृष्णयशससागुर्नधलकं गुणपत्रिकायादावस्तडागधः
नाथात्रसादूदसधत्रिसुधत्रयत्रिमातशक्यं अर्थशला॥ ॥ किंकुलनविशाल

10

नगुणवान्पूजितानत्रहाधनवंगविस्त्रायेतिगुर्नकिंकत्रिष्यति॥४॥ रिंमक
लनक्षुयथाजनयायगाम्कगुणधलसाडाकंयूयनसमसुसर्तमान्ययाकूवध
नूवंगनाजायाकायच्छिथशलत्रिगुलिशलदावक्षुयथाजन॥ ॥ किंकुलन
विशाननविद्याहिनडयानत्र॥ अकूलीनायिविद्यासादवदेष्टाविपूजन॥४॥
गानखयूयमपत्रिकुलवकशयावक्षयविद्यामसलदावगामुसलदावकू
जागिशलसर्तदवयूजायादार्थआदययावक्षय॥ ॥ नावाधियरवविद्य

जावपालंनगच्छति॥४३॥ किंनरगणयात्र नाकयां किंयथाजनं॥४३॥ विद्याशुलसाः
नामडाड(ध्रं) समुद्रपालमयागाल नामलागलयं वृं गाधनकाव नामनक्षत्रः
आजना॥ ॥ गुणसर्वगयूक्तं विरुवांशानि नथका वासुदेवनमस्य किं वसुदेव
नगजाता॥४४॥ विरुवरासंगुणनखयूजायाता वदूकायधायमदू गुणधालुवित् ॥
नायत्वं समस्तसनां पूजायां वृं धसुववृदसुदवच्छर्म्मनं पूजामयाक॥ ॥
गुणकूर्ध्वकिदूवत्वं दूवयिवसनासनी कटकीगन्धमाघाय ह्ययंगच्छति यनदा ४:

॥४५॥ गुणवक्तृं साधूजनं वसुलयावधाका धायसु कटकी ह्यनयानान् रुमजशन
ववार्थं नायिनयानसर्गं लाकडां वृं ॥ विद्यात्वं वृत्तयत्वं वृत्तिरुल्लयय नाक्रम
शस्वदणयूजिगात्राजा विद्यासर्वगयूजयत् ॥४६॥ राजावविद्यासर्वकं वृत्तयधायम
दू राजाशुलसा धवनाई सशक्तमान्यया वृं विद्यागामुसर्वकं शुलसागनावानसनां
नाजानं यजनं मान्यं वृं ॥ एकंतापिसूयुगन विद्याशकनसा धखा कूलं यून
मसिंहन चतुर्नेवयकायन ॥४७॥ सूयुगयाकाव विद्यावक्तृ साधूयाकाव कूलसक्त

कं य प्रमसिं या दव त्र द्य मा स कि त्र न र्थं कौ हि त्र का ण या य रु य का व द्ध कं का य नं गः
 कं ॥ ॥ विद्या या हा ज नं कं च न् क वि ड व्वा स हा ज नं । ड रु था हा ज नं क वि क वि त्रा रु य
 दा य क ॥ ४८ ॥ विद्या स ल द्वा व ध न सा ध न य । ग ल क्ति तां ध न वि र्थं वि द्या सा ध न य मा ल वि
 द्या स ल द्वा व ध न द न् व ॥ ॥ न म कि र्ति ता व द्वा न म कि गु णि ता ज ना न् पु ष्क का ष्ठ
 च मूर्ख च रि य न न च म न्य नं ॥ ४९ ॥ स स व स मा च न म का ल द्वा व गु ण स न स व कं या क
 म व या न म वि ल द्वा व ग र्थं कं गं द सि र्थं मूर्ख ला क य ल ख यं न ल य न कं म जि व कं य व

12

ज नं ॥ ॥ न हि क म नि च त्वा वि स र्था का ल ख या ज य न् आ ह व मे धू न त्रि डा न् थ
 स्वा श्वा य म व च ॥ ५० ॥ ध य न स नि ल व ल स म न व् आ ह व या य क म न व द न क म न व वि
 द्या स न क म न व मे धू न या य म न व ध न न नि ल स म न व ॥ ॥ आ ह वा जा य न वा धि
 ग क्ति कू ल स जा य न । अ ल क्ति क स र्थं स र्थां स य दा दा न् र्ख न् र्वा ॥ ५१ ॥ आ ह व या द
 न या धि र्श न् व मू य स ग या न स र्ज क मा च र्श न् व द न स ल क्ति मा न् व वि द्या स न
 स आ व रि त र्श न् व ॥ ॥ व द व दं ग न न ह् ज य ह म य वा य न आ णी व दि य न नि

ह्यं वरवनागयूनाहिन ॥ अशा ॥ गानरवूवा क्रण वेदवदांगततासव ऊयहाम क्रियाः
 यायसव आणी वीविय द्वाव नाजानया नाहितया यध चिठक्रा ॥ ॥ यागसि (धाः
 महीयाल चिदक मीविवर्जिते ॥ विदूत्र वयत्रियागी समदुःखं समसुखं ॥ अशाः
 स्नातिलाकन चिदवनमझाक आयरुविलस त्यागी शयूव सुखदुःखता नखं
 वक्रं थक्रं नाजायायनवा ॥ ॥ कुलगील गुणार्थित सत्यधर्म यथायदा युवीनद
 सलादका नाजा श्रमाविधीयत ॥ अशा ॥ कुलवक्तु गिलवक्तु गुणक धार्मिक यहुन

१३

विचक्रन कमावक्तु थचिठक्रं नाजायायक्रं ॥ ॥ कुलचं सनितं नूचं मयग
 वृसिदाऊवं अनाययजक रुत्रिं नाधियथं मियाजयत ॥ अशा ॥ काप्रि वगतस सन
 तवक्रं नाहिरुतिमशव आयमग्रथं वययाकक्रं थचिठक्रं नाजायायमनवक्रः
 ॥ ॥ मूलवृत्तिहिनाधीन सर्वलतयत्रिकका गुविश्रव्यवगन्तव धर्माश्रया
 विधीयत ॥ अशा ॥ काकार्यशतसर्गांडकार्यसहितयाक समस्तत्रयायत्रिका
 याक निवदं न ववनायाक थक्रं धार्मिक आय ॥ ॥ अण्वदकगार्यास सर्वरु

४ प्रियदर्शनका अर्थ ही लघु (लाघव) परवे वेद्या विधीयते ॥ ३॥ वंगमा आदिने वेद्यना
 मुसु अस्यासक कर्क नादि रुदचिकिसासवला कवताव ही लसा रा वारुं द गुणवंत
 थर्कं वेद्या धाय ॥ ॥ पिरुयितामहादक नाम्नामिह या चका छुविच कन्ति
 वेव सुयका नयना गत ॥ ३८ ॥ वाय अजानिह्यं विचकल नाम्नासवया कर्हिं
 छुविया क कथिनमश्व थर्कं सुवा नयाया ॥ ॥ सुदृष्टगृहीता (को) नयः
 रुकाजिता कन ॥ सर्वनाम्ना मालं कि परवलख कड्यन ॥ ३९ ॥ च्छया लक्ष्म मुनं अ
 सा

18

५ प्रियदर्शनका अर्थ ही लघु (लाघव) परवे वेद्या विधीयते ॥ ३॥ वंगमा आदिने वेद्यना
 मुसु अस्यासक कर्क नादि रुदचिकिसासवला कवताव ही लसा रा वारुं द गुणवंत
 थर्कं वेद्या धाय ॥ ॥ पिरुयितामहादक नाम्नामिह या चका छुविच कन्ति
 वेव सुयका नयना गत ॥ ३८ ॥ वाय अजानिह्यं विचकल नाम्नासवया कर्हिं
 छुविया क कथिनमश्व थर्कं सुवा नयाया ॥ ॥ सुदृष्टगृहीता (को) नयः
 रुकाजिता कन ॥ सर्वनाम्ना मालं कि परवलख कड्यन ॥ ३९ ॥ च्छया लक्ष्म मुनं अ
 सा

समस्तस्य वाक्पुत्रं वाहनस्य वाजिनं वा ह्यर्थं वीर्यं गुणं धनं अश्वं अश्वविधायनः
॥५२॥ समस्तस्य दंष्ट्रासुखं धर्मं वैवाहिकं नमस्तव पूज्यं वीर्यं गुणं धनं अश्वं
अश्वविधायनः ॥ मन्त्राविवाक्यं यन्त्रागं यन्त्रायिकाय नमस्तव कर्माधिपतिराजस्य कर्मादिपतिः
बुद्ध्या विधायनः ॥५३॥ ह्यनिर्वचनं यत्पुरुषं यत्तवाधनाया कर्माधिपतिः कर्मादि
कर्माधिपतिः पूज्यं कर्माधिपतिः ॥ यार्थिवस्य चरुं गन्धं वदामि गुणं धनं कर्माधिपतिः
यन्त्रागं यन्त्रायिकाय नमस्तव ॥५४॥ वाजिनं वाहनं वीर्यं गुणं धनं अश्वं

[illegible]

याजमानसु सतिनागनागमागुलाजसुः स्वर्गनिवासं च यच्छने च धनागमाः ॥ ७ ॥
ग्यानिर्भं याजलयावकायसु राजासु स्वर्गागुलादयिव जसु कीर्तियत्र सुखं
याजिलक्ष्मीवृद्धिशूरा ॥ १० ॥ मुखनिथाजमानसु गंधादेखासहियनं अय
नवाधेनासंचनत्रकयननकुर्वी ॥ ११ ॥ मुखयाक याजलयावकायसु राजा
सु स्वर्गादायनदूरे वज्रयकीर्तिह्रायिव लक्ष्मीभायिव यत्र लोकासु नवकः
वनिव ॥ १२ ॥ गमाहूमी स्वर्गानिर्भं धर्मकामार्थद्वयं नृणां गुलावकनिथाजं न

गुलाहानवि वर्जयन् ॥ १३ ॥ धर्मनग्ननखराजान धर्मार्थकामवृद्धियायनगुः
एवकर्म याजलयमालशुभागुलाहाननर्कतादगमाला ॥ ॥ जसु किंचिद्वं
वृत्तं ह्यगुर्वायदिवागुरुहाय नसंवर्द्धने राजासु रुह्यदूहकनत्रयि ॥ १० ॥ गुः
एवकर्म याजलयान धर्मनगुरुयादनं सुकनथादनं दूहकनयादनं राजाया
लक्ष्मीवृद्धिया ॥ ॥ यथाहूमयत्रिकुंद गायदायनं कुंदने ॥ गंधाये नृमः
मद्यर्व कूललीलनकर्मना ॥ ११ ॥ गायलययात्रिकायादनं दूयदायकं नीकद

सुखं ॥ १॥ ॥ ॥ ॥ विद्यति सध मग या व वा ६ सु शल सतां स न हा मंद सं ज व श ल सा
 ग्या नि म श व र्क म ग व सु र्व का य श ल व व च्च या का य म या क र्क भा मि सा चिः
 थ श ल थ न र्क द ग ल सा म हा सु र्व ॥ ॥ न क वि क स चि ग मि ग न क वि क स्य वि
 धि या का न ना द व जा य न मि ग लि य व रु था ॥ ॥ ॥ मि ग द र्क व का न ना न श क द यि
 व का न ना न मि ग डा सं ज न श र्क व का न ना न ॥ ॥ का र्था थि रु ज न ला का न ला
 का व ल मा र्थ न ८ व सं ८ कि न द र्क द द्वा य नि ह्य ज मि मा न न ॥ ॥ ॥ का र्थ या अर्थ

न ला क न रु ज ल य र्क व ग थ ना धा व सा सा चान द द्वा न न म द न व व मा म ना द न र्क
 व ध ना थ ॥ ॥ कृ ना व दानि ना नि डा अ रु न स्य कृ ना न नि कृ ना तो र्थ द वि द स्य द
 र्ज न स्य कृ ना क मा ॥ ॥ ॥ व स न स व ग न स्य ज व र्क या कृ द म दू रु फि श व र्क या व नि
 म दू ना स न र्क या सु र्व म दू ॥ ॥ न क व स्य कृ ना मा न्य दू र्ज न स्य कृ ना क मा श व र्थ
 सु नां कृ ना स हा कृ ना स थ व का मि नी ॥ ॥ ॥ र्वा र्थ या मा न्य र्थ म दू दू र्ज न या क मा र्थः
 म दू व स्या सु या स न हा म दू का मि नी या स थ र्थ म दू ॥ ॥ दू र्ध ल स्य व ल ना ज

वाला नां विदि नं वलि। वलं मूर्खस्य मान त्वं चो वना मन्त्रं वलं ॥ ७॥ दूर्ध्वलया वल
शलसा नाजा वालकया वल शलसा स्वाय मूर्खया वल शलसा ना न मवाभ या
न खूया वल शलसा रुसखा का य ॥ ॥ अनाथा नां द विद नां वाल वृद्धि गयः
धिनां अनाथ यय निरुग नां सर्वथां या धि विग गि ॥ ७२ ॥ गति मद्रुक्तं या द विद या व
ल कल कश वया का ० शलका व नय त्या श वय नि स धनं स ग नि शलसा ना जा ना
श ना ॥ ॥ आ धि न स्या थ ही न स्य न क मि ग सि न स्य चा द द य (श क द ध स्य मू रू

वृत्त न मो य धं ॥ ७३ ॥ आ धि न क स्यं चा द द र्क वि म य मा स्यं चा द द र्क या ध न या डा ध धि
मू रू नि ज न या र्वा ल स्र य श ना ॥ ॥ अ उ ल व स नं या क द र्हि द ग क वि ग रू ॥ ना
जा द न म सा न वा प नि ष सि स र्वा धि वा ॥ ७४ ॥ आ धि न क स्यं चा ल आ य नि का ल स
न य म दू व ल स न क व र्क न क र्वा का र्य द न का स्यं ना ज स क द सि श ल का स्यं ध
वल स वि चाल या क र्क ध र्क व क धा य ॥ ॥ रा व स द्धि म नू य नां ग य न र्क स र्क
क म र्वा रा व न च वि ना का सा रा व न दू हि ना न ना ॥ ७५ ॥ म नू य या र्क क र्क

वसनां सिद्धिरयं रावमागुनः श्रीयारवा लसायः ॥ १ ॥
 ॥ नदवालि धनं काष्ठं वावा नन नमयनं । रावखु विदवदना तस्मा रावामहक
 लं ॥ २ ॥ लाह संदवमखु सि संदवमखु चा संदवमखु रावमागुन दवशला ॥ ॥
 शिथ्यानां दवगात्रार्थः ॥ नमात्रा जदवगा दवगायां विगाहका वाक्क (७) ज नदव
 गा ॥ ३ ॥ शिथ्या दवशला सा गुनः लोकया दवशला वाक्क ॥ ॥ विषयः ॥
 यथा वक्ति नारायणं दवगा ॥ ४ ॥ यथा यथा माता मित्रयः यथा सजा ॥ ५ ॥

२०

वाक्कं मासाय शला अग्निः गुनः मासाय शला दवगा सायः ॥ १ ॥ मासय शलाः
 यथा सायः कायसाय शला मित्रः ॥ ॥ गुनः निदिजानीनां वधुनी वाः
 ॥ २ ॥ यनित्र कागुनः श्रीनां सर्वस्या रागना गुनः ॥ ३ ॥ वाक्कं साय शला
 सा अग्नि दवगा ॥ ४ ॥ वधुनी या गुनः शला वाक्कं मासाय दवशला थवयुः
 लोक समस्तया दवशला अस्यागतः ॥ ५ ॥ डरुमस्या विवधुस्य नीचा विग
 रुमागता पूजनीया यथा यथा सर्वस्या रागना गुनः ॥ ६ ॥ डरुमका निशला सन

[illegible]

नित्या नम्राभिध॥४॥ साम्बन दानन रुदन यनियानि न वल वलुभात्रका वरुगः
नखूनाजान्धनेडयायन एरुभात्रकाडयायमाला ॥ यागुह्यागीगुलआगी
हागयनिजनसरु४॥ गमुवाधात्रालआधा न्यनयं चत्रकल ॥ ३॥ सूयागुसत्य
गीशयगुलसल यशयडयरागुकात्रयस थवयनिजनलूधन गमुसुवाधः
शयत्रलसआधाशय याजासलदंलधकागा ॥ ॥ डरुम४थलियानन पूनारुद
नजाजयगा लवूमधियदानन एरुडल्ययवाक्रम४॥ ३॥ सूयूचूमजाजलयन

मन्त्रावली शूलजा जल यशस्वसा हृदय मन्त्रिजा जल यशस्वसा दामन शूलजा
जल यशस्वसा दूय विनंतव ॥ ॥ आत्मच्छिदं यत्र दद्यात् विद्याच्छिदं यत्र दद्यात्
यह कर्मस्त्वागानि यत्र दद्यात् वचनं यत्र दद्यात् ॥ ॥ धनं दद्यात् मनः यत्र दद्यात् विद्यमं यत्र दद्यात्
मनः दद्यात् दानं दद्यात् गार्थं दद्यात् शिष्टं यत्र दद्यात् कालं यत्र दद्यात् कायं दद्यात् विकल्पं दद्यात्
गायत्र्या यत्र दद्यात् ॥ ॥ मनसा चिन्तय कार्यं तत्र दद्यात् तत्र दद्यात् कायं दद्यात्
मन्त्रावली शूलजा जल यशस्वसा हृदय मन्त्रिजा जल यशस्वसा दामन शूलजा

कत्रयनवमसिधमालवचनयकाशयायमनव॥ ॥ डयकात्रगृहीननः
 एफुनीसुफुसूधवगायादलग्नकनरुनयो० केनेवकनकि॥ ॥ डचिनयान
 कास्यं एफुनयाकांडचिनकास्यंमाथमालगाथमाधनसाकंधनकलकंधन
 कस्यंयिकायादवक॥ ग्यानिपूनूनसाधन॥ ॥ वरुदमिगुकंधनजावः
 कालंविवर्जयन॥ नधेवमागनंकालविद्यादगमिवामनि॥ १०॥ धवविद्यनि
 वलसयाकर्मवंधूधाय॥ एफुशुलसनंज्याडुकमालधवसंयनिदनकावव

२ ^{जि} ~~जि~~ कदकदर मधुन कि नहा मर। मधुन वेदकल्याला काय मधुन विरय ॥ २ ॥
 ह्यं च या क्रं थ शल गधमा धा व सा ला हा स थ व धा गा द रु या व धा क (ध) मा च
 करु व ॥ ॥ रु जि त्या म धु न व च न कान म द्वा ला म धु न व च न द्वा न सा ला
 क स क ल द र्ति न रू व ॥ ॥ ॥ रु जि का ग व स ल क्षी जि का ग मि गु वा ध व ॥
 जि का ग व ध न स्या पि जि का ग म व र्ण क र व ॥ १२ ॥ ल क्षी व स ल य रू व जि त्या म
 व ध न स यि व जि त्या म म न ल श रू व ध न द जि त्या म ॥ ॥ यि य वा क्य य दान
 न स च्च द्दु श्च निं ज न व ॥ न स्मा रु द व रू न र्थ किं वा क्य न द वि द न ॥ ॥ ॥ यि य

२३

वा क्य द्वा य मा ल द्वा ल सा स म र्म य नि स नार व रू व ध न न व च न द वि द श य
 म न वा ॥ ॥ अग्नि दा ग व द (ध) व ध सु या लि दू ना य हा क र दा वा य हा नी व ध
 उ न आ न ना यि न ॥ १४ ॥ मि द्वा व जा व र्क य स न क ल जा व र्क म व या व रू ला र
 या क र्क य रू म्प्री या क जा व र्क म व या र्क रू य या क जा व र्क ध रू धा य ॥ ॥
 आ न ना यि न मा य नि म वि व दान या र्ग जि द्वा न ध न द्या सी न न न व रू हा र व
 त् ॥ १५ ॥ ध र्थे ना स च्च र्थे ल स ना वा क्य द र्ति श ल स ना व उ र्ध्व द स व र्ति थ श ल
 र्वा

मातृकार्त्तं वृक्षरुह्यान्मकद॥ ॥ ^{जा}नायाल ^{पु}स्थानि स्थानि धर्मयत्राय लानि जि
 नः यत्र स्यान्निधिमिधर्मनयात्रयन॥ ॥ ॥ नाजानना कयाय शलसा धर्मनस्य
 न्थायन उयत्र सना च्छुकावन च्छु निमिरुत्त (गदधसु च्छा च्छु वव च्छु वसु शनस
 नं द्रवि च्छकसायमाला ॥ सिंह दं कं व कादकं लिख्य च्छात्रि कर्कटा वायसाय
 च्छलिख्य ग्छद गुला मिनिगुर्छी निगुर्छी द्रेशन॥ ॥ ॥ सिंह या क स न च्छु ना गुला वाहन
 या क स न ये ना गुला खि त्रा या क स न खू ना गुला ग्छा या क स न खू ना गुला ॥ ॥ य

२५

हन कार्त्तं मर्त्यवां थानत्रं क उ मि च्छु नि। सर्व दं क खू न कार्त्तं सिंह दं क विधीयन॥
 ॥ ॥ च्छु कार्त्तं याय स ह न कम याय नि क र्छे ल य ह न य न नं नि क र्छे ल न स न च्छ
 न सिंह या क स न॥ ॥ च्छु या नि च्छ सं क म्य व क व ख दि नो न ना कार्त्तं का न य य
 धुर्नां सर्व कार्त्तं नि का न य न॥ ॥ ॥ वाहन च्छी च्छ नि यू च्छ नं धम कार्त्तं याय
 मजि नाल य च्छ नि य ह या क व जा च्छ व धम कार्त्तं याय रुट का व च्छु कार्त्तं या क॥
 य गुला नं च्छ यूर्ध्व च्छ विहागं च्छ व च्छु मि य मा क म्य रु जि न लिख्य च्छात्रि क

कीर्तिना ॥२०॥ सुधागंतुलंदनं धूपवज्राभयं ग्यानिर्वंधूत्राललय सुनभूमं
याग्वं ध्वयतागुनिकयाकसंनमाल ॥ ॥ वक्षसिचार्यसंतुष्ट सुनिद्रा ॥
ध्वयनन। स्वामिरुकाय सुनव वज्रगं ह्वानगा गुणा ॥२१॥ दत्तकावजुदिकं नय मः
दाकावचिरायनं संतुष्ट शयणी ध्वनदं न। ध्वनद्रुलनचायक स्वामिरुकिश
य। धूलशय ध्वयनात्रिचायाकसंनगुणा ॥ ॥ गूधमेधुनद्युष्टं कालचालः
जसंग्रह। अयमादिसुधूरुं यं च विद्य च वा यसा ॥२२॥ मीधुनसुगुधशयवल

२०

सुग्यानिर्वंधूत्राललय यमादिमशय सुर्लं धू शय ध्वयनाकाखयाक सुनगु
णा ॥ ॥ अविष्ठाकं वरुणव सिनाद्रं च न विदति ॥ संसंतुष्टं रुवनिखं गोलि
चनीदली ॥२३॥ धमयाकाकाय मसिधनाल आसमवस्थं जायमाल चिकूवां
धकावमजायमनं व तायधकावधायमनं व दकीन संतुष्ट शयमाल धमाः
नागाधूयाकसंनगुणा ॥ ॥ विंशत्यनागुणायाका ठलुक्कादिचदना संजः
धकिविद्युसुचोन्नजयध्रुविद्यति ॥२४॥ धनियतागुल सुनानं धनलय

२३

एवम् डाक विचक्रपक्षाय समस्तं शक्रदको ऋदलयरुं वधकं जननजयत्र
 परुं व॥ ॥ अमरवीथामनूच्यानां मनूस्थनचनस्यां यत्रस्य नायकात्रयं
 सांरुवतिविग्रह॥ २३॥ मरुर्वमशवलोकन निवर्धवचनमज्ञा भवनभात्रकडु
 वरुत्रकस्यं साभूजनयाविग्रहदं व॥ ॥ एकादत्रयधकणीवा यत्रनकि
 महानवा असाध्याविनाशनि हे नूष्ठां वयद्विन॥ २४॥ मोदद्यागल यत्र
 ऋगुदियाकावयाद हे नूष्ठां सगलयाया थववेविशस्यं माकदवका॥ थगनः

२४

थववेविशलकावग्यायमाल॥ ॥ वसुनंसिर्व्वान यनकनापिसंरुः
 सिधामपितानं वग्यायूक यत्रादासत्रथियथा॥ २५॥ दृष्टयाकायावचान
 दास्यं सूयाकरुजलय विपतिगललयमाल पूर्वसुधीमस्यं स्वावंधसयधुंगन
 याक्रियागजाकाव माकत्रवाचविदाव विपतिगललयादवका॥ ॥ दृष्टयं
 सांगत्रिर्षु समग्रवाननंगन॥ अरुगपूर्वनामन सुडवंधचसागन॥ २६॥ स
 मूडशलकास्यं विद्वानिधायकाव आखालभमनव नाजानशलसुनं डग्ना

वन रुतत्रयमनव मा क न मान न सा ग व स मू द र्व श्र त या द व धी नाम न ॥ ॥
श यं ग र्ग व यं स त्र वि ना धं त्र य न ह्य वा य वे ना क म मा न स्थि त्र यं यं चा त लं ण र्ग
॥ २१ ॥ यू छि स्ति त्र स्य त्रा जा स्य दूर्था व न हा दा च्छे स क ब षा त छि द्धं दू किं ज १०० अः
प नि का द्धं दू किं ज (थार्थ) वि ना ध या द चा दा च्छे ता धा त्र सा भ व न च्छे स क ब स नाः
र्क्ष श त्र स नां अ प नि स त्र बा र्ध न त्र स नां अ प नि का द्धं दू किं ज स ण नी ल न उ ता ल्य च्छे क
ता न व य च्छे स क ल ण न छि द्धं दू किं ज श ल स तं अ प नि क व य मा ल ॥ ॥ द्वि त्वा रि त्व

वकम्मानि कृत्वा वैत्रमसातकं। ग्यातयगतं जाति जयत्रयत्रयवत्वा॥३॥धवर्ग
निगुणवर्कडासहत्रयावता। धमाल वैत्रिरावयातसातमर्महदलयावभावक
रुव। गाम्भयत्रयलंकाकनचूयायरुव॥ ॥चिकाजालमनूच्यानांमस्त्रातीमिधू
नंजात्रं। असीराग्यजात्रं। नूनांमातत्रयाजात्रं॥३॥मनूच्याजात्ररुवसा
चिकासलायाजात्ररुवसा। मिधूनूयाजात्ररुवसा। शीराग्यमधूनूवसतयाजात्र
शलसात्ररुवसा॥ ॥अध्याजात्रमनूच्यानंमनाध्यावाजिनंजात्रं। अमीधूननडात्ररुवसा

नां मखातां मिथुनं जात्रं ॥ ३२ ॥ मनुष्या जात्रं रश्मि जात्रं सजात्रा जात्रं सजात्रा जात्रं
 वदनकावक्षु जात्रं कुतुमवयकवक्षु ॥ ॥ कस्तुविषयनाधीनां कस्तुवा
 सानिवायया रश्मिपूर्वार्थसंयुक्तं सर्वकस्तुद्विधता ॥ ३३ ॥ मनुष्या जात्रं कस्तु
 सा भवया कस्तुमा ललाव कुवक्षु न वक्षु आदिन धायमा ललाव कस्तुशलाः
 थवक्षु या दवसंयलि र्शुनकावक्षु या सिने कस्तुशला ॥ ॥ अधिनाद्याधिनामू
 र्वक्षु वासियत्रसवका जीविनायिमूर्तं च यंचन दूस्वरा गिता ॥ ३४ ॥ अग्नि

३०

दूस्वरा सजावक्षु वागिशवक्षु अग्निमवया कस्तुवावक्षु यत्र दनजाय
 मालक्षु धकाक्षु म्वा म्वांशिक क्षाय ॥ ॥ जायग्नित्यमाजा किं कुकं वायिदिन
 दिनं सक्तं वक्षु नाजा किं यदि वक्षु समानत्र ॥ ३५ ॥ गान्धर्वमनुष्या यनि सन
 दिनयति दूविना नत्र सा र्शुक्षु उल्लेधनि रश्मिं धक्षु मनुष्या नासन शः
 वा ॥ ॥ यत्राजयत्रवक्षु यत्रयानयत्रक्षु यत्राजयत्रवक्षु यत्राजयत्रवक्षु यत्राजयत्रवक्षु
 स्यायिधियं रश्मि ॥ ३६ ॥ मवया अत्र सवतनस्य चावक्षु भवया वक्षु

ननियमालम्भं भवयासु या कडावर्कं भवयासु स चा नमालम्भं धर्कं यूनः
 यालम्भं भावः ॥ अलोचानिभना दान नलोचानिभना नव ॥ अलोचः
 विषवानात्री यूर्योययतिस्मिनि ॥ ३॥ विष्वासं वक्त्रं निधनिशुलकाव अणुवि
 शुलं कायसु यदतस्तनं यूनममदनकाव अणुविशुलं ॥ विरुवास
 वृष्यकं ननानीनानिदहि न ॥ चाणुनापिन नव सुखाय स्यात्किविपुलं धः
 न ॥ ३॥ समस्तस्य नंदय उ यूनया नं नानीन यूनया नानामख धन (मालम्भं)

३१

व चाणुन विरुलसु नं डरुम जा निच्छि धरुल मादलयमाल ॥ धनमाः
 कय वंधर्म धने सर्वयनिष्ठि ॥ जीवनी धनिर्न लोकं मृगं वलो धनागला ॥ ३॥
 धनदयान संमस्तं धर्मसाधनय वृत्त धनन धनदवमनूय म्वाढाया सुखरु
 व निधनिशुलकाव शिकडाड धं चूयया जनमदू ॥ अगि संयदभायनं
 रुतं यं यन नाहयं गुरुच निखना नूय सुखं वरुल यानिना ॥ ४॥ अगिन नवः
 संयल्लिशुलकाव भाति नग्यायमाल वृत्त गधभा नसा ड्च यवनिठ वदयाः

नभाक(थं, कृतात्रि नंभा ०० व॥ ॥ कारुकारुका नित्यं कासुरातिचत्राः
 गिति यस्याहय्याडि संडका चगस्यासु वंगहं ॥ ४१ ॥ निठमनिठलकावत्रागि
 यासुखमदू (गानखयूचययासु) सुंडमशु वकाव, कृयाहि नमदू ॥ ॥
 सोहि नं कर्षका नित्यं सुखनित्यं मत्रागि नाहय्यारुमुवसानित्यं नस्यनित्याः
 सुवंगहं ॥ ४२ ॥ निठउ नवत्रागिया यायशयममाल (गानखमनययासु)
 धवसासुता कावकृयाडि काहाश ०० व॥ ॥ सुर्वयववसंद ४ख सुर्वम

३२

मवसंसुखं पुनविद्यासुमासन, नकनंसुखदुखया ॥ ४३ ॥ कृयासिनांयः
 ववसासुता नदुखशयां धववसासुता नकावनय दगसामहासुखशुलं ॥ ॥
 सुर्वयववसंद ४ख सुर्वमामवसंसुखं पुनविद्यासुमासन, नकनंसुखदुख
 या ॥ ४४ ॥ कृयासिनांय ववसासुता नदुखशयां धव, वसासुता नकावनय
 दगसामहासुखशुलं ॥ ॥ सुखस्याजुन वंद ४ख दु ४खस्याजुन वंसुखीसु
 खदु ४ख मनूयानां चक्राय विवरुग ॥ ४५ ॥ सुखयाजुन वससुदु ४ख दु ४

स्वया अकचससुख कू काल याचा कहिल (थं) शब्द ॥ ॥ वदहिसुखसंघाट ४४ अ॥
 स्यानेयुव हिलि हिलि दया निगुण सदा भिद्यति वदित वाक ॥ ४५ ॥ मूर्खला कमूढा
 वचाल गुलाभा नखं क्रायमनव गायना धात्र सा सूर्य सुनना कयूर्य निरुजव (थं)
 हल शब्द ॥ ॥ अस्तासहसंगन कोन याखधं मा गति । यथापि हो दिनी रुक्म मः
 अमित विधियन ॥ ४६ ॥ कू जानिय नूषडा संजन शब्द वद डरुम मनूष्य शब्द सनां क
 हि नब्द गायना धात्र सा सलिति सु दूदना नदनं लाकन धना नाडु लय शब्द वः

३३

॥ ॥ अस्तस्य कद्वदन अधमाया नि साधवामा नखनि निनस्य क सभापि विस
 मायन ॥ ४७ ॥ अजात कडा नाया चातन व साभूजन यनिनय अधमि रय वल
 सखि दूना कयूल माथवा डलं सु माथम व डला सुहाया (थं) शब्द ॥ ४८ ॥ डरु
 मसहसंगन कोन या नि समुन्नति । मूढारुना नि धार्जक गीकृत्य कू सुमसहा ॥ ४९
 थारि दय नूषडा नाया चातन व यधिं ठम नूष्य शब्द सनां हिंदय नूख शब्द व
 कस्तान सुला या न द्या न या ठमाल सुक्या च न वद व द धना थं संगमाल ॥ ॥

किंकलिकनिसंयर्क स्वरावाद् ननिकम। यस्यामन रुलम (अहं) कखाया नामन
 नांगन ॥ ३० ॥ नाया चाका वशका कय स्वरावरुलमरु धनाथ्यं सा दून अंयडा
 नाया चाक अंययू हाकु यादू सवात शयमरु ध्यं हाहावरुलमरु न ॥ ॥ सुक
 नावसुगं धनम् (अनिम्ययनिधिनि) मधूदी न समावृत्ति निम्वकं मधूनायन ॥
 ॥ ३१ ॥ हाखननल ला यावनिम्वयू दधू सय या वनय ध्यानें गलिविय कस्तिनः
 दूदवानसजिविय धा धननिम्वचाक यकं मजिवा ॥ ॥ यूरुंक मूचजविद्याय

३४

नरुसुखयधनं कार्यकात्रसमयत् नसाविद्यानतर्द्धन ॥ ३२ ॥ यूपिसुचास्यं नः
 याविद्या भवया नाहात सुचाक धन कार्ययथाग यायवलसमलाक धविद्या
 कधधनक गननिसुमवाकहृद्व ॥ ॥ दूबसुनानिमिलानां निमनेहानिच
 वाभव किं पुया जन करुद्यं मथिनातिहलानि च ॥ ३३ ॥ दूबसुचाकमिग सुः
 नहामदू सजनि कपुयाजनयाय वलसकं नमदू निहलशनी ॥ ॥ अगः
 थादू मयूथानि दूबसुनिचवांधवा काक वालक हर्गं च कालनायति

यति॥३॥वनसुखादसिमायास्तान्दूत्रसुखादवधजनधवचलसुखास्यंनः
 यास्य॥॥यस्यावचमहीनस्यकर्महीनस्ययाननानिबधवनानांनस्यरुमाः
 यादूतथाजथा॥३॥यस्यामदूववनस्यमसुवनस्यावधनिबधवद्विशुर्वग
 (यनाधनसालसधनलयाथे॥॥॥गयद्वंमिधार्द्धमस्याकलसुधावत्
 नानिहलंजाकिप्रहानमधद्वंन॥३॥चालसुत्वाद्यमिहाकयाधार्द्धमिधः
 नूषकचालसुर्थयोमधजस्यववधयनानिहलशुर्व॥॥निहलंकेयन

३३

सुवा निहलान्नतिज्ञानायादखसंशकलीनस्यप्रतिविषयनिहला॥३॥कयः
 नियाकयादसुवात्रानियाकयादजनदुखियाकयादकार्यवाक्यनद्वयद
 र्थधननिहलशुर्व॥॥वनयंकूलजंयस्यविषमायिकन्यकात्रयसनीन
 नीचोदुवेवाश्चसदासंकुला॥३॥ग्यानिमंनसुकूलसजयलयकंन्याविनूषिः
 तीशत्रसनांश्चर्कडाविवाहायायमालत्रयवकशुलसनांतीचजानिडामनवधम
 सुमानउतवा॥॥विखादय्यमृतंपाकमेमश्चामयिकांचनानियादयूतमाविः

आं श्री गुरु दक्ष नामः ॥ ३२ ॥ विष्णुश्चाकुरुनसनां अमृतकलत्रस्य कायजाग्यः
 पदं ध्यायस्व नसनां लक्ष्मणवकायमालनीययाकुरुनसनां उरुमविद्याः
 वदस्यं विद्याश्च नववसनमालां कलीश्च नसनां श्री गुरुश्च कायजाग्यः ॥
 कस्यदखं कलनासि ध्यायिना को नयीकन । कननं च नसनां चार्कं धियकस्य निजनि
 ॥ ३३ ॥ सूया कलसं दामनमदू ध्यायिनामपि दनयू सूना न दूखमभव संयहि सुदाद
 सूया कद धि नमश्चाद ॥ ॥ दख्यश्चि गुणायश्चि निगुणश्चापि जायत सूकः

३३

मोत्रस्य यक्षस्य नारायणिकर्क ॥ ३४ ॥ दामनमदू सूना नमदा गुणश्च नसनां म
 दाक्षं मदगधभा नसा को नयल यादूनयमालार्थं धनादधि ॥ ॥ अमृतं गिलिः
 ववक्रि अमृतं क्षीनराजने । अमृतं गुणवती राय्या अमृतं वालरायिनां ॥ ३५ ॥ गिलि
 वकालसं मिअमृतं नयसका कदू अमृतं गुणवती श्वदावमी अमृतं वालकः
 माचानखं द्वायावचन अमृतं हवा ॥ ॥ दूलं हयाकनं वानि दूलं ह्युदमां यउ ।
 दूलं ह्युदमां नासि दूलं वचनं धिया ॥ ३६ ॥ दूलं ह्यलसायाकनवचनं दमावक

स्वामिलायदलंरुधमवहृतिस्मिलायदलंरुलाकसकलदधानायकावहृतायवच
 नदलंरु॥ ॥ तदीनांजात्रावीधृष्टनात्रीनांचयतिवतामनूष्यातांनृपायाहृदः
 शानांयतिवति॥ ३४॥ तदीयकासुगंगाधृष्टमिसादकासुयतिवताहिंमनूष्याद
 कासुनाठाहिंमदगदकासुनाजागजदनाडादगहिंम॥ ॥ यगुयोहंसमाकुरु
 दासिदाससमाकलराध्यावित्रहिर्नयसां यथात्राप्यसुधागुरु॥ ३५॥ कायक्य
 भावामिसानसंशकयावधानसनांमुमदनवावकुवनशकागुधवाह॥ ॥

३॥

सर्वभाभवत्रातामुयंत्रत्तैसंगमं॥ तस्मान्मदधनिचयागावस्यकाधननंकि॥ ३६॥
 समसुयासिनंत्रत्तदकासुधववस्यसवावधानसासुत्रत्तडरुमधननधनवासं
 मुडरुमशुवा॥ ॥ कूसुहसिकुडवानिकुयगुकुलंरुनन॥ कुमकीरुंननराजाः
 राष्ट्रवीनरुयन॥ ३७॥ कुवहृवनदवमिसा॥ कुडवभाचकंरुवकुयगुकायः
 भावानकुलमीवकंरुवकुमकीनराजामाचकंरुवखूनराससकचंगलथा
 रूवा॥ ॥ मुनांदाससहस्राणिगुप्तागुलिमहीयन॥ गवात्रात्रसुमायह्रीमवः

लघुनिनासह ॥ ३८ ॥ मितायादावनदा वक्ति ॥ १००० गुणयता ॥ ३९ ॥ चिन्ता राजा सुकृतकृतः
मन्त्रिदात्रयादावनदा कायभावाय काया यस्मीवर्तुसर्जनसन्निवाह ॥ ४० ॥ गुणयता ॥
ता ॥ ॥ कवयकिंनयस्थिति कित्तरुद्रातिवाजसा ॥ यमदाकिंनय कूर्चकि किंनयत्य
तिमयया ॥ ४१ ॥ कविकयनिस्तन कुमरावर्तुकोरवतकुमनवमिगानकु कर्ममियाः
कथनकावमन्वाका ॥ ॥ यग्यथाजनार्थार्थं पूजायिषुयथाजनहितयथा
जनामिष्टं सर्वमामयथाजन ॥ ॥ कायभावादनयकं यानं निमिहितं श्लाघाकायः

३८

माला धवतां नामन पिषु क्रिया कर्म याच कनिमिहितमाला हितयायननि
मिहितमिष्टमाला धवतां चिन्ता हितयायन सर्वयथाजनंदव ॥ ॥ समुद्रावत
नास्मिन्नाकायावतनागृहाननरुद्रावतनादगा च विज्ञातौ वतनाक्रिया ॥
॥ ॥ समुद्रनकावद्विषयीसुयाकावतनाव सु राजादगनकाव सु धवचविः
उसराह ॥ ॥ नगृहानिनवासानि नयाकावतनलक्षका नवधेनेववधवासु
लीलाचकलसुया ॥ ॥ ॥ सुयावासुसुयाकावतन लख्यायादामशवतं भूतयागं

सतां कचत्रिभुम्भु याशकासुधवसुशतवहं व॥ ॥ नदियातयनकुलं नावीर्यं
 तज्जगधनं नाजीतां च नदीनां च सुकन्दललितागति॥ ॥ ३॥ नदिनयधिवीसुः
 काकायिव मिसाजननधवकुलकाकां व॥ नदियाशतसुतं मिसायाशतसु
 तं मिसायाशतसुतं सुकन्दलैव ललयमद॥ ॥ लतायाश्च धिगं वदं ह्य
 यश्च हितं नय यापुस्कं यश्च यश्चिन्नु यश्च यश्चिन्नु संसया॥ ॥ ४॥ सिमाकोस
 यां वपुस्विनसिमागं व॥ राजानधमडा याथावकं मानं व॥ मिसाजनन

३२

धमडा यासयावजावकं गायुशं व॥ ॥ नेवयश्चक्ति जागर्द्ध कामांश्च
 नेवयश्चक्ति नेवयश्चक्ति मयामना अर्थिदाखनयश्चक्ति॥ ॥ ५॥ वृक्षगिकानः
 नमखाठ कामां गश्वनमखाठ अहं कालिशवर्धनमखाठ अर्थिगजावकं
 नदमखाठ॥ ॥ जिह्वमन्त्रयुगयक्ति राय्या तगनजीवनं नदयुगयगनशूलं नः
 यं वगहमागनं॥ ॥ ६॥ जिह्ववानकावनया अन्नहिंद मीशवसा जीवनवगदाव
 हिंद शूलशवसा संग्रामनजयलयावववकं हिंद शशवसा सुदृहाववव

वरिंद ॥ ॥ लक्ष्मी लक्ष्मी नक्षत्र कलहं नक्षत्र स्वर्ग ॥ अथ यमत्र लक्ष्मी नक्षत्र
 वरिंद निवास ॥ ॥ लक्ष्मी नक्षत्र मद्र्या कथा कलहं नक्षत्र कथा कलहं नक्षत्र
 नी अथ यमत्र लक्ष्मी नक्षत्र मद्र्या कथा कलहं नक्षत्र कथा कलहं नक्षत्र ॥ ॥ अथ यमत्र
 विनयादि कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र ॥ ॥ ४०
 (गान स्वर्ग) विनयादि कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र
 ययव धर्मि गुरु विनिवास मद्र्या ॥ ॥ अथ यमत्र लक्ष्मी नक्षत्र कलहं नक्षत्र

कनि निर्यं मधुन हाखि च साज नक्षत्र नक्षत्र ॥ ॥ (गान) यमत्र लक्ष्मी नक्षत्र कलहं नक्षत्र
 वया कलहं नक्षत्र मधुन वया नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र ॥ ॥ अथ यमत्र
 सिद्धि निर्यं मधुन हाखि च साज नक्षत्र नक्षत्र ॥ ॥ (गान) यमत्र लक्ष्मी नक्षत्र कलहं नक्षत्र
 कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र ॥ ॥ अथ यमत्र
 विनिवास मद्र्या कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र कलहं नक्षत्र ॥ ॥ अथ यमत्र



नया का (धं) सु सु सु व नि य न या क (धं) ध या स लिल व द्धि मा न य श्रु ति व र्ध क
 ला या य द्धि मा ना (धं) व द्धि मा न य श्रु वा ॥ किं जा ने व ह रि य न् (ग) क सं का यः
 का न के व ल म व कू ला ने वी य ग वि मु म नं कू लि ॥ २ ॥ व व र्ध का य वा य का व द्धि
 य स्र क सं गा य श्रु व ण स्यं कू ल ध व ल य श्रु व द्धि का य नं ग क (गं) र्ध य ग याः
 क कू ल वि श्र म वि व र्ध रि ण ॥ ३ ॥ क र ष्या गि य कू ल द्धि वि द ण व न वा क न्य
 का ला व सा न यि न नं या स्य नि वि क्रि या ॥ ४ ॥ सु र्ध का य स्र र्ध श्रि ल गु लि

४१

न २

दृ द्धा य द व सा जि र्ध लि क्का र्ध य र्ध या वि का व ला य म रू ॥ ५ ॥ व र्ध
 व ह व यू ग ग या म का य दि व र्ध न य र्ध या स्र म (ध) न नि लं वा द म म रू र्ध न ॥ ६ ॥
 न ल र्ध का य द ल क दा र्धि न र्ध का य न ग या वा न र्ध व र्ध ना र्ध का य न अ ध
 म र्ध र्ध या र्ध रु ल ला क नी ल र्ध सा म र्ध द व र्ध के र्ध ना या र्ध रु ल ला क र्ध ना ॥ ७ ॥
 ए र्ध न धु क र्ध के न द र्ध मा न न व नि मा द र्ध रु न र्ध नं र्ध कू य र्ध न कू ल ज थ ॥
 ॥ ८ ॥ (ग) र्धि नं व नं र्ध र्धि मा न व न न यं म व नं र्ध कू य र्ध का य न कू ल मा

वकं व॥ ॥ एकनायिसूयुगन युमिननसुगन्धिता वासिगं न दनं सर्व
 सुयुगनकुलं जथा ॥ ॥ सुकं सिमानवाहावनसुगनं ननासाकथं सुयुगः
 शलकावधवकुलदका रुनि कावधा कां व॥ ॥ यस्यायुगावसा रुखाः
 शय्यिन्दुनागसिनि विरुवखुमिसं कु ह स्वर्जसुस्यमहीगल ॥ ॥ गान्क
 काययनिसुसुयनिसवकयनि धववसासवाठ धननगाकक्या यथासंख
 र्मश्च सुखशवशा ॥ ॥ ययुगासुयिठु सुयिनायामु योखक ननिगुंयवनि
 वस्या

४२

यस्य जीवनि जीवनि विद्युमिगन्ध वाधवासरुलं जीवीनं नस्य श्रुता र्थकोनजीवनि
 स्वासु सुहाय्ययुगनिवनि ॥ ॥ गानखुं ववयावसासु चादयुगन ववमाः
 म्यासु लयावगयिव धर्क यूयसवत मिगयायं जाग्य विस्वासयायं जाग्य धर्कः
 युगमाया ॥ ॥ गान्क म्यादाव वा ना वा क्कण्डा मिगया कर्क धर्क म्यादाया सरुल
 जनमाया ॥ ॥ वाचा सवखनी जस्य शय्यिन्दुयवनी सनि लक्ष्मीत्यागवनि जस्य स
 रुलं नस्य जिविगं ॥ ॥ गान्क यावचनसु सवखनी चाना मुयुयवनी सनि रुलाः
 लक्ष्मीदया वखागी शव धर्मादाया सरुलमाय ॥ ॥ धर्माधकामभादनां जस्य

कोपिनविद्यन। अजागवेन वस्यिनित्रर्थतस्येकाविमं॥१२॥ धर्मसुखविहीनस्यदिन
 थयमासुक्ततादमदुर्लभं धर्मसुखविहीनस्यदिन॥ ॥ धर्मसुखविहीनस्यदिन
 यातिचविक्रिया। सुहाहकालवक्तुनस्ययेवेवयजीयन॥१३॥ धर्मसुखमदुर्लभं
 दिनवानाअविक्रियानथरुण्वत्वाहकालयावमुथं धमयेधमहिंनलजावमा
 रूदशना॥ ॥ गणनयिगुणावाद्या दोखावाद्यागुणात्रयि। रुकिमूकं वचाः
 पाश्चात्तवाचगुणुगेनवान्॥१४॥ गणनयाखंशत्रसुतां गुणशकाह्वायमालमि

४३

उयाशत्रसुतां दारवतशकाह्वायमालगुनयाशतसुतां गुनयाशतकाजगुरुकिखं
 दनमनवा॥ ॥ अकनचनं केनचं पाणिकं ० गनत्रयि। करुचं भवकरुचं पाणिकं
 ० गनत्रयि॥१५॥ मयादत्रखं ह्वायमनवकं ० याणधनसुतं यादत्रशकाह्वाक॥ ॥
 अहित्राप्यमदानश्च गुरुं गमचत्रवर्जितं। यतिकूलकणनव नत्रकस्यायत्रविभिः
 ॥१६॥ मथलक्षं मोमिणमथलक्षं सुदुदधिमथलक्षं क्षिपंसीयत्रवन्वाय
 यवक्षं धर्मिगुथायसनत्रकडाडधेनात्यधाय॥ ॥ धूलजं धाजदात्रामालक्ष

लसद्यगामिनाद्यनकधीजदाधीनातदात्यदू४खराजन४॥२॥धीनामसुठयासद्य
 नलक्ष्मसुसुंनारुकरनधीनायाधस्वर्कसुअलक्ष्मनिमिरुतिनअतिनदूरवशः
 ॥७॥नित्रानकसात्रसंगुरुद्वितीयगतक४समार्य॥ ॥ ७४॥कालेननि
 यूनासन्धि कालेनमिगविग्रहकार्यकालेनमाष्टय कालेनयदनि यजुमा॥१॥विः ४५
 लकालेनगुरुवासन्धियायमालवलकालेनमिगुवाविग्रहयायमालकार्य
 याहुडयानकालेनयजुन॥२॥कालेनयचनिहानिकालेनसंरुनयजु

॥कालेनसुखजातिवैकालेनियूलनिकमा॥३॥कालेनसमसुधीर्षुवाढः
 धासत्रयवकात्रनयाजामंरुत्रश्रुवकालेनशत्रवावसदनकालेनसंजागलः
 यावधानधधिंणकालेनसुयूलकमजिव॥ ॥कालेनयह्वनवीर्जरेलकाः
 लायवरुणकालेनयवरुणसुखिंयून४कालेनिसंरुवत॥४॥कालेनवलसुयुसा
 हलकालेनवलशत्रवावसुसुवकालेनयनयकायहेनाढकालेनमात्रकः
 ॥५॥ ॥खदिलेनमिवायधचन्द्राकनवमात्रतासुवसंरुवतकालेनरमाः

का जमरु रुचं ॥ ३ ॥ आकास पृथिवी लंख चन्द्रमा सूर्यमरुस थोसमरु काः
 लनमा चक वूव थया के नान का ल अति नगं व ॥ ॥ किं क वि श्रुति व सा च (धातु
 यन न विद्यत ॥ नग किं जन क ग्राम च य क किं क वि श्रुति ॥ ५ ॥ गथा य स द्वा या व च
 य द्दम द न का व या चि लि श्रु द्द य न क या ग्राम स च रु मू मा ल य न शि चि चि य ४३
 क द लि व न म थ रु व कि म न्द य वा क्र म अ वि व क ज न रु न गु ण वा न किं कः
 वि श्रुति ॥ ॥ क लि ल व न स म व ल म ला क थ वि वा न म या क सा धू ज न न रु की

या सा ग न रु द या य का ल स ॥ ॥ म लू च लि त र्था न म ज दं सा ग न रु च ॥ ॥ ॥
 नि य न म रु स रु न च ल कि क दा न ॥ ॥ क र्था न स स म न य र्व च ल ल य स र्द म
 थि न म रु व म रु य रू म रु का या व रु ल ल ल म च ल य (ग न रु ल स न ॥ ॥
 वि द रु म रु च या ला वि द रु व रु (ग न य ॥ या न रु वि द रु नि च द या सा धू र्व वि
 य न ॥ ॥ ॥ अ व रु न च ल स रु व रु य रु य रु क रु य द व रु क रु व रु न नी च रु
 क द व रु सा धू ज न या क द या द व रु ॥ ॥ सा धू स मा द मा रु न रु व कि द रु वि रु

ॐ उय कालगतनापि दुर्जनकनगञ्जन ॥ १० ॥ साधुजनसुमानयादन धवग
 तिलमीयंयत्रागश्वदुर्जनयाक रुकाणन किनाडयकात्रयातसतां सुनंथव
 यायमजिव ॥ ॥ वृषवाश्चानिजांमुनिनां वृषवा मुवाधयेत ॥ ययदधिकारः
 नपि चरुहीनानकस्यति ॥ ॥ ॥ ग्यानि रुकां द. गामुनवीधयायजिव अग्यानिः
 कं गामुनवाधयायमजिव गधनाधनसा ययदन मनंकायकावगल मिखाः
 मद्रनमखादध ॥ ॥ नालि कलरुला कोला दधनकयिसर्जन अन्नयिवदना

४५

काला वहि नवमनात्रमा ॥ ११ ॥ नलिश्च लथं संजनशूरव यिवनमहिगाद्व
 नहिंद दुर्जनशूरव वयलसथं यिवनहिंद दूवनमहिंद कृक ॥ ॥ चन्द
 नंणी नलचन्द चन्दननरुचन्दमा चन्दचन्दनयामश्च साधुसंयक्तगीनल ॥ ॥ ॥
 धीखलुगीनल चन्दमागीनल धनयागिन साधुजनवानायात्रागीनलश्व ॥ ॥
 अथमाधनमिच्छति यीतिमिच्छतिमश्ममा डरुमान्यमिच्छति मात्राहिमरुनाध
 नं ॥ ॥ ॥ अथमजातिमनश्चन धनं च याव व यीतिं च याव मधमजनः

मा २

नडरुमऊननशको मान्यं च या च वतवतंचिचाने च या च व ॥ मभि
 काधनमिच्छुक्ति धनमिच्छुक्ति याधिवा ॥ नीचकलहमिच्छुक्ति णाकिमिच्छुक्ति साधव
 ॥ ३ ॥ लाजिनिनद्यालसलयश्च व वाजानधनसलयश्च व नीचजातिशका
 लायसलयश्च व नकलकासाकिशयकजिवख साधुजनयाक दमाधव ॥
 च वाचाथमिच्छुक्ति नयमिच्छुक्ति वात्रिका सुगयः कुलमिच्छुक्ति स्वर्गमिच्छुक्ति
 नाजसा ॥ ४ ॥ च व जननधनवां च या च व नयहिनय च व च माचायनिसः

४१

जानस्वयं च नयनियनिसन स्वर्गवतं च या च व ॥ अतिक्रान्तयदवाम
 तिलाहनयसुखं यत्रयीजत्रयावृष्टि नेवसाधुखविद्यन ॥ १ ॥ अतिदुखनजावः
 नधनला च अतिलाहिशवर्जनदुश्च व मवयाकयिजयाय धनसाधुजन
 ॥ नरायणं नारायणाय नमः ॥ यकायने वसाधयन ॥ स्वल्पकार्यनकू यत्र निरुलं
 नेवमवयन ॥ २ ॥ यानिर्जनमरुयागुलिस्तवनेमनव अकार्यमयाक चिकुनि
 धावनकार्ययायंमरु निरुलंश्च व ॥ ॥ लेललेलनमानिर्जनभाकि कनगज

नमः साधवानरिसर्वत्र चन्दननवनवनन ॥ १॥ यच्चतयतिष्ठमानिकमद्रु किलि
 यतिष्ठयानमद्रु साधुजनसकल्ययाकं हिठमस्वगुयतिष्ठधीस्वधुमद्रु ॥ ॥
 यत्रकार्यस्वयाकासास्वकांर्थेतिवसाधयन ॥ सुरुत्कार्यस्वनिवृत्तिनाउकार्यः
 स्वविक्रम ॥ २॥ भवयार्थशुनित्याकर्कधेवकार्यसमनधानयाकर्कमिथुयाः
 कार्यसशकामनधानयाकर्कनाजायाकार्यसधमरुयाथयायमालवलनवाः
 वथयायमाल ॥ ॥ जललस्ववनित्राना जलुगननदयन ॥ ॥ अत्रलमयिसाध

४८

२ मरुतामयिसमय
 नां शिवालवनिष्ठनि ॥ २॥ नीत्रया कार्यलंस्वसत्रायाथं यासुनभयमद्रु साधुजनः
 याकार्यसुत्रल्लयमद्रु लाहसत्रायाथं नानव ॥ ॥ मरुतामयिसंयदूतन
 वमनस्वनायदानवसंवद ॥ २२ ॥ तवयाअयदादवसंयतिष्ठदव चि वामनस्व
 याकं संयतिष्ठमद्रु अयदानवठमद्रु ॥ ॥ समुश्चिअककन वमुलघनचल
 माविश्रुसमवणमार्जन मरुतांकालसंयुते ॥ २३ ॥ मरुदवत्वंसंडुयय सुमन
 नायादव अककन ययान चन्दमालं संडुयय वमुलघन विश्रुसंडुयय

सुमन्तायादाव. तवयूयसुं डरुयाय हाथजवतुयावा ॥ लखक ४ या थकः
 येव यवायनामु विनका ॥ सर्ववर्णनिनामधा क्रियावकययलुगा ॥ २४ ॥ याक
 के यनयूयसुं एमुसवर्क. थनसमसुवर्णनिदकोरु मूरवक्रियाकर्मयाका क्रिः
 यावकयलुगन ॥ ॥ बोरिह्यंजुवनिर्धं. नाजसंवागयावनं. धिवाचखाविः
 कूर्वनि. कर्षिकूर्वनिकागन् ॥ २५ ॥ वाहानवनिजाल सुलावनिजाल. नाजायासंवा
 तथावन. थयगाभिन्नानियनिर्धनयाव. कागनयनिर्धन. का. कायाव. ॥

४९

वरुर्धनाथिवानिर्धं विद्याथिववर्क. लुडकात्रमयलुकि. मानाथिचयनिर्ध
 जग ॥ २६ ॥ धनववर्कन. वनजयायालयाय. विद्यार्थिन. अत्रकषामुसुन. व. य
 उकायवांठायाव. लुडकात्रसगमनयाव. मान्यअथिनायाकन. नाजायाः
 कशव. ॥ मूरवयदलाकोल. वाचाचन्दनगीतल. ददयकर्हि संयुक्तः
 जिवद्धिधूरुलेक ॥ २७ ॥ धूयलपनिर्ध. कामलगीतलवचन. धीखलु. धीन
 गालरुक्कर्हि. थयगाभूरुयालद ॥ ॥ दूर्जनविद्यवादीच. नेवविष्वास

कावयत। मभूयवनिजिकाय ददिहानाहंविस्व॥२८॥ दूर्जनशूद्रवयकाजुव
वनकाकेकं धर्मविष्वासयायमनव कस्मिन्मयानहाव। धर्मलूकउसहलाहिलवि
षधर्मज्ञानं॥ ॥खल४ संयमागानि यत्रिच्छिद्वानियस्यनि। आत्मनावित्वा
मागालियस्यनिचनियस्यनि॥२९॥ दूर्जनयाभवयाच्छिदवचनचिकुनिष्ठा
धर्मज्ञानं॥ ॥दूर्जनियात्रमूर्खायं धनवस्तुचननिगुणा। दूनः
ह्यायिचहस्योक्तं किं सुकां॥३०॥ गानखमूर्खयाधनिशलकावगुनि

कर्म ज्ञान कर्तृत्वं निगुनिश्वरत्वं तत्त्वज्ञानाया वाच्यं ॥ ॥ मूर्खायि यत्रिहर्ष
वा यत्तु क्षादियदयं यत्तु । हि दत्तवाच्यं सकर्म ज्ञानं तत्त्वज्ञानं ॥ ३॥ मूर्खायः
निश्वरत्वं नोदतमालं मनसा दत्तं यत्तु यासि नं यत्तु नं यत्तु कृतं च न न हानं
व कं धनं कृतं यत्तु यत्तु यत्तु ॥ ॥ सूर्यकलखत्रं कृतं सूर्यकलखत्रं तत्त्वज्ञानं । म
क्षाडखत्रं सूर्यखत्रं कृतं नायसा मयं ॥ ३॥ सूर्यजं कृतं यासि नं दूजं न जं कृतं
न कृतं कृतं न कृतं सा मयं कृतं सूर्यजं कृतं यासि नं दूजं न जं कृतं कृतं

न उच्यमान्यमशु वा ॥ ॥ रुक्मि रुक्मसु रुक्मन गन रुक्मन वा जिना ॥ ॥ गिना दण
 रुक्मन दण ग्या गन दूर्जन ॥ ३३ ॥ किं गिना शलदा व दाल चि कया च क मालः
 सला व शलदा व गन चि कया च क माल दाल व यनि सवा शलदा व जि कया च
 क माल दूर्जन वा शलदा व दण ग्या गया दाल व डड वा न द व ॥ ॥ रुक्मि म कः
 ग रुक्मन क रुक्म रुक्मन वा जिना ॥ ॥ गिना गुद रुक्मन रुक्म रुक्मन दूर्जन ॥ ३४ ॥
 किं गिना शलदा व अ क ग जा दाल वान सला डी शलदा व सान क जान भ गः

३१

डा शलदा व ध ग जान दूर्जन डा शलदा व सुम जान माल ॥ ॥ दूर्जन ४ यः
 विरु यथा गु ध ना लं क ना धि हि म विना लं क न सूर्य रु म सो न रु यं क न ॥ ३५ ॥
 दूर्जन लं शे दाल गाल न माल ग म सव शल सनां म विन रु या व दाल चि ध शल
 सूर्य डा शका ग्या य माल ॥ ॥ या गु या गु वि ध भ न भ नू य न ग या ड था रु ना नि
 ध व न की लं की ना नि ध व न वि र्व ॥ ३६ ॥ या गु डा अ या गु डा वि ध र्व न द्या दा सा
 वा वि डा धे द्या स न का व दू द व र्व सूर्य दू द ना न का व वि ध व र्व ॥ ॥ र्व द

गुरुमिति मखा नायकगुणकदात्र न। कालदुर्जनमायाक्ति, एनसुं वक्रि विजवत् ॥
 ॥३॥ चित्रागुरुलयाव जाखालयमगव। गवत्संश्रुतसा न डावत्सुवा सखाः
 समिग्या (यं वय रुव ॥ घस्ति क क ल क दा ख आ गिस्ति म भूयिं ग ल। गनं कान
 वखादव कृजस्या क न विद्यन ॥३८॥ यालया क दा ख न स्वय गा दव ॥ गि यि व
 मिखा या क दा ख न यय गा दव ॥ कान या क खूल या क ए व क्रि गा दव ॥ १०० धू
 सिया क अ न या य मं जि व रु ॥ ॥ कान क न दू ना या न मे ग ह रु य वि ल य ज न ॥

३२

विष्णुसमय कार्य विना समुपगच्छति ॥३९॥ ए न स आ रु र्क क य नि श ल द वः
 दू ना स आ नि र्क मिश्रु व स न रु ना द न मा ल क न धा न सा विष्णु स या न दार्थ का
 र्य ना स रु व ॥ मने व मृदु स्ति च मृदू ना रु सी दा न र्ना ना सा अ मृदू ना किं वि
 न न स्मा नि क न न ना मृदू ॥४०॥ ना यि व न क उ भा च क रु व क क न ना यि व भा च
 के य व ना यि व ने सा ध य म जि व ना यि व न क क या सि नां क क धा य ॥
 व न य जालि न व क्रि द ह मू ना नि व क ति। समुल म मूल यं ति आ था य मृदू नी त ह ॥

॥४॥ एतन्मन्त्राख्यं ह्याभिनवतान्धाशुक्लान्नवाख्यं नन्दं वहाशुक्लं शिवं नन्दं व
 नववाचस्ववल्गुवहादन्त्यानन्मात्रकयूवधननक्तकयासिननायूवक्तकध
 यः ॥ धूलजं मावलिवर्द्धकयाचवद्वरुषिनि। उखनानिचदगानिदूवतयनि
 वज्रयन् ॥४२॥ संयुर्धुलाकथसाखावाकन्याग्रययववधनयानिसंगादकमाः
 लः ॥ नरुह्यरुदमेधून्ययत्रयोमानूकीर्तनं। कलहयुक्तिज्ञेवदूतयनिः
 विवज्रयन् ॥४३॥ एकयाखायिनवर्द्धमवयाभवयादाखनलज्जावर्द्ध

स्वायं उद्यानवर्जं धनं यानं संगोदकं माला ॥ ॥ अथ यानं गङ्गा सुसुग्माः
वचनं वयसुक्तिकं । गङ्गा अथ यानं दूतं गङ्गा त्रिवर्जं यन् ॥ ४४ ॥ न कश्चिदप्युक्तं
किञ्चित्कालं न मावानि यासु मग्नं न कदाचन गङ्गा चक्रं गादकं माला ॥ ॥
गङ्गा न च सदा मिश्रं यत्नं स्वामिन्नं गङ्गा मिश्रं । गङ्गा जीर्णं वस्तु जीर्णं च दूतं गङ्गा त्रिव
र्जं यन् ॥ ४५ ॥ मिश्रं शूलं सुतं दूर्जनं शूलं दूतं गादकं माला ॥ यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
नया वदामि सा जिथि सा जीर्णं वस्तु धनं गादकं माला ॥ ॥

नविष्णुस्य दमिनं न, मि न चापिन विष्णुस्य न। कदाचि नू क विनामि नू सुवर्णं चं यः
 कास्य न॥४५॥ वे विवश लु दा व विस्वा स या य म न व मि नू श न स न वि स्वा स या य म
 न व कदाचि नू मि नू व म य लु दा व सु म सु खं य का स क य व॥ ॥ न विष्णुस्य द वि
 स्वा स वि स्वा स्य व वि स्वा स्य न विष्णुस्य ह य म य न म न वे व नि कि न नि॥४॥ अ वि
 स्वा स कं या क वि स्वा स या य म न व मि नू या श ल स न वि स्वा स म न व कदाचि नू
 मि नू व न व चालु दा व सु म सु गु क या स्वा य का स या च कि व॥ ॥ न वि न वि

३४

न खि ना च सु गि नां श सु या नि नां वि स्वा स न व क सु रं शि नू ना ज क ल नू च
 ॥४॥ न दि व या स या य म न व लु गि ना हा क व या स या य म न व दा द व सु अ सु
 जा द जा व कं वा या स या य म न व सु वा द वि स्वा स या य म न व ना जा वा द वि स्वा
 स या य म न व थ न स वा वि स्वा स या य म न व श ना॥ ॥ न दि गि ल र व या द क ज
 व ना लि नि ना स या सु म सु म हि ना ना ज न र व नि वि ना य र व॥४॥ ख नि धि लि
 स वा द सि मा य नू य म द मि सा म कि म दू ना ज थ न ना म्वा य म द ॥ ॥ ज दि क

अथ निधीति निधाय न कात्रयं न दूतमर्थयकात्रयं यत्राकदाचदर्थनी ॥ ३० ॥
 धीनिगाडयकयवर्द्धनधनयाहलयायमवयास्तीयाकजाय ॥ नगच्छ
 दूष्टविस्वासं न कुर्याच्छलविग्रहं ॥ आमत्राविनथाक्राद्धमिगुवेत्तनकत्रयनः
 ॥ ३१ ॥ दूष्टर्द्धवाविस्वासयायमनवच्छयालविग्रहनत्वादासुखवसंधियायः
 मनेव धमिक्वाधिशयमनेव हितावचादार्द्धवा मिगुवावेत्रियायमनेव ॥
 कलयंमन्त्रिनाजानं विद्यचंविखलियति यवजिनं वनं गुरुं न स्यवन्नि सदाः

३३

वृथा ॥ ३२ ॥ कुनिनिन चललय मन्त्रि यात्राजाया दयलियनिवाद्धन वनरंगः
 सन्याधि धनसवास्तचलयमनेव ॥ ॥ कुमकुनास्तिविस्वासं कुर्यात्तया कुर्यात्
 वनि ॥ कुत्राजनानिनिवृत्ति कदणनास्तिजीविनं ॥ ३३ ॥ कुमकुनीयाकविस्वास
 यायमनेव महिदस्तीयाक वनश्यमनेव कुत्राश्चसनिवृत्तिमद कदणयाय
 मद्र ॥ ॥ नास्ति सखं सदा चोत्रनालोचं वखलियति मद्ययसुखदं नास्ति दूतः
 कात्रयंमहि ॥ ३४ ॥ ख्याकसखंखंमद्र वनिनिष्कायादव वाक्कलयाकेशीः

चमत्रतद्वयमनवकुत्राश्च सुनिवृत्तिमदूकुलस्यमदू॥ ॥ नास्ति सः
 ससदाशौचं नालोचनं वरिधौ मययसुहृदं नास्ति दूतकालं गुयं महि॥ ॥
 दोविद्याविद्यमनिचदयहो गुबूनिश्चया अंकनं नेवगतं गं निवस्य वरस्य
 वा॥ ॥ वाक्कलनं कंचानकावदधनवतमनव सुयूयनाया चाल् अंक
 वनवानमनव गुबूवनिश्चय अंकनवाप्रमनव महादवडा धसाव अंक
 वनवतमनव वरु॥ ॥ लोकयागुरयं नाका दक्षिणस्यागणीवता यंच

३५

यगुनविद्यं नकुश्चरितं संगति॥ ३६॥ लोकयागुरयविवनाजा नानव
 त्यागी सुविशी लुथकागा मथायसुमदनाडा थायसु चानमनव॥ ॥ नाजनः
 पुक्रतायाति वै कल्यां चवदुधनं नेनालिधिचवधिस्थां नमूर्खं सुकनं वद
 न॥ ॥ अंकलगायकं मजिव चंचलनं शावकं वरुनं मसव मिमाजनः
 याधिचवद्विमजुव मूर्खनं संकनं ह्यायह सया वूव॥ ॥ मलमूर्ख अग्निः
 (गरे) याधि (गरे) वच यूनं वद यमयस्मा नमा कुरुन कावयन॥ ॥

ख१

विनागरख, अग्नि, गरख, व्याधि, गरखन, वाधल, यक्ष, धन, न, यक्ष, दयक, म, न, व ॥ ॥
 उदग, कल, रु, कु, द, न, म, य, न, क्रिया, नि, दामि, थ, न, माल, स्य, स, व, न, न, हि, व, र्ध, नं ॥
 ॥ अ ॥ रु, न, स, क, यो, ल, श, लि, मि, सा, द, द, वा, जा, न, या, सि, मा, या, क्का, या, न, को, य, का, व, वा, र्ध
 न, थ, र, व, ता, न, या, ल, क, ल, श, व, न, क, न, नं ॥ ॥ अ, न, द, द, श, नं, वि, द्यं, यि, द, द, श, गु, णः
 य, यं, न, य, य, स्यं, द, श, गु, णं, मा, स, मा, र्ग, द, द, श, गु, णं, द, नः ॥ ५० ॥ स, जी, व, नि, गु, णं, य, स्य, य, स्य, ध, र्म, स
 जी, व, नि, गु, ण, ध, र्म, वि, ही, न, स्य, नि, रू, लं, न, स्य, जी, वि, नं ॥ ५१ ॥ ग, न, र, व, म, नू, यं, जा, नि, य, नि

ਅੰ

६२

आखनविद्यामसुत्रकवडाकं वधनयाळू यनसी कठमेधून जूलासु धास
 वितसुनयावडाळू वरुना ॥ यनदाना यनसी च यनितारं यनस्य च यन
 हास्यं गुणसुन यनतयनितवर्कथन ॥ ५२ ॥ यनसी यनधन भवयाखं सुनित
 भवयाहास्ययाय धनयायमनवा ॥ यनाककाय्यरुकां नं यनदधियव
 दिनं वर्कयका दशं मिगं विवकं रुयथामुत्र ॥ ५३ ॥ यनाकसकाय्यमात्रकं
 वखरुवनधमयका नं रवका ककं धर्धिठ मिगना दनं मात यनथाका वलान

कय काथं वधादय क हव ॥ ॥ दू दर्ष च कृच्छ्रिन्नु कुर्यात् कुनदिगथा ।
 बूद्धश्च कुराणत्र वर्जययल्लुप्तसदा ॥ ५३ ॥ महिन्दर्षेण नमस्तत्र अयच्छ
 धाय सञ्ज्ञानमगतं कुरु चक्रिणम् शूलकावनादनमात्मनः ॥ उच्चैर्घीयादिभूयान
 त्रमुद्राद्यदि निहारुमा ॥ गम्यालिमेनिका चेन्न वर्जनीया यत्र क्रिया ॥ ५४ ॥ ह्यन
 या अयस्त्र उच्चैर्घी लोका निहारुमा ध्वनि संभूय शूलसंगतं यत्र मुक्ता शूलका
 वनादनमात्मनः ॥ ५५ ॥ ऊरुकाश्वखर्वधेन सहसापिरुलादय विप्रहिखः

महादामा यत्रिवर्जदित्रकण॥७५॥ गार्ग्यं नकार्यसहृदयातं गत्वा ननरुल्लव
यिद्वकार्यश्लसर्गं विजनी सतादतमाल॥ ॥ रकारकासमयः कार्यकार्य
यडुलं न॥ सदाकार्यस्वसंदह रुतयंसर्धदाव॥७६॥ ॥ रकारकासमयः कार्यकार्य
यजुकार्यडुल्लयाय सदादकार्यसंदहयायडाः ग्यानि लोका न॥ ॥ रुतयं
मकुली नार्जं नाराय नारायजीविनं रुतयस्मृताडुतां रुत्वा यूव्वयकाविनां॥७७॥
कूजातर्ग्या भवयाजिव निनर्ग्यादया नारायवग्यायडाः ग यूव्वयनिमय

माला ॥ ॥ वा दया दी हयं वा ता यद्वनां गिधि शारुया यवना नां हयं वक्षः ऊं हुनां दू
 यदाय ॥ ५॥ सिमा या हय शूलं रुस यल या हय शूलं गिधिल कालं यवना य
 हय शूलं वक्षया नमला रुके ऊं हय या हय मनुष्या ॥ ॥ माता यदि त्रिषं दद्यात् कृषिना
 विविधैर्गन्तुना राजा कर्माणि वा या य कामिना गुरु विधाति ॥ ५॥ ॥ कदाचित् कर्म
 मनकाय यमने कलदास्यं ववून कायमिलदास्यं राजान अन्त्या यया नदास्यं थ
 नम् भवतल दाया यमरु ॥ ॥ यग राजा हयं श्री व समुदी चयु प्राहिता

अह

तगा हं किं क विद्या मि जगाल दा नग हयं ॥ ॥ ॥ गद हं राजा धर्म धर्म
 स्वशूल दा व मली नय प्राहिता न थथा यम काया यं मरु ॥ गनानं नृकनय शूल
 अनानं हय शूल ॥ ॥ विधा गोलिखि गंयस्य लला न दल मालिका देवा यिनः
 हिम द्वाकि सलि यनियन ४ यून ४ ॥ १२ ॥ विधा ना स्यं लला नम थास्यं रुया अ
 दल देव नं लिथ ध्या यमरु ॥ ॥ कर्मना हिय धाने न वृद्धि हि ना यथा ऊ
 नो या खान स्य कृणा वृद्धि न न द वरु विद्या नि ॥ १३ ॥ कर्म यधान वृद्धि धला

वच्छयलाहायाच्छुद्धिदत्ताथनगाथदवश्यधाना ॥ कर्मजनयध
 नत्रलनिकृष्टंरुगुरुवलिष्ठदहवगायिजानकीदृश्वहागिति ॥ १४ ॥ कर्म
 हागयधनहिदवलासुगुरुगुहयादाववलिष्ठअविष्टादियादिनधीनासुविद
 हाशवकर्मसुत्रादमजुतिनेदृखिशव ॥ सानकलहवममिन्दाखायिगुप ३०
 सहतिगुलायिदायनांजतिवकीरुगविधान ॥ १५ ॥ अनकलहिनकास्यंदायः
 याल्यंगुलाकाकंरुहग्यहिनशलदावगुलानंअगुलशब्द ॥ किंकवास्ति

ननध्यागवर्जमानस्यकर्महि।यायनेवमनस्यानांवृद्धिकर्मनसात्रिनि ॥ १६ ॥
 यानिअग्यानिशयावच्छायकर्मनच्छायानांयमवाह्यंमगाकथमयादुडया
 यनमजिव ॥ हसुस्यसुखंनयानंसुखकं०नरुषली।धुनंरुषलीकधु
 रुषलीकिंयथाऊन ॥ १७ ॥ लाहाथयाअलंकालदानयायकंधूयाअलंकाल
 सुखखंजायद्रुसुधानयाअलंकालधर्मखंऊननिलाहिला ननियानच्छय
 थाऊनधमानायागसाधर्मलाकेशया ॥ चक्रिर्गुरुषलीमुनदुमानांय

अरुमर्षं। स्ववृत्तिरुमर्षं यसा यनिना रुमर्षं कया॥१॥ ^{या} अत्र का लश लं सः
 वनिगुशय सिमाया साहाशलं वृत्तिवत् मिजनया साहाशवसा धवसाहाः
 वरिन स्वाभिया साहाशलसा दयावंगशय॥ ॥ नकं रुमर्षं चन्द्रा नात्रिर्षं
 रुमर्षं यनि। यथिदी रुमर्षं नाजा जीलसर्वं रुमर्षं॥१॥ नकं रुमर्षं अलं कात्रः
 चन्द्रमा मिसाया अलं कात्र यस्मी यथिदीया अलं कात्र नाजा समस्तया अत्र
 कात्र जीलसाहा वशली॥ ॥ मरुतायि रुवण्डे नमी चमान मरुनं कंसा

५१

लियादद्यानन कालियस्य विरुमर्षं॥१॥ नवनयाकाशलकास्यं अयमानयाका
 वरिठ नीचजातिर्नयाकाशलकास्यं मान्ययाकाकमहिंठ (गाता) धावसा कश्च
 स्यनगो नन लान कालिनागया स्रुता वैशवार्थी॥ ॥ स्रुतिरुमिगनगाय स्रुति
 नात्रियतिवता स्रुति ४ क्रमक नाजा सुंगी खावा ८ स्रुति॥१॥ रुमर्षा वलं स्वश
 लकाव स्रुतिधाय मिसाजन यतिवता शलकाव स्रुतिधाय विकान सुंगी मश
 वरुं वाक्का स्रुतिधाय नाजा क्रमावंग शलकाव स्रुतिधाय॥ ॥ स्रुतिरुः

मिगनंतायं यत्तुलया न विद्यते । लयास्मनं यत्रि लय ज्ञेयस्मनस्त्रिःसूत्रिः ॥ ८ ॥
 शार्वांगमलम्बुदलश्चाह । लंखस्त्रीयाधाय सनादनावभलवानकावशुक्रिय
 सिनंशु चिधाय ॥ ॥ ॥ स्मनाशुद्धनेकांशं नाममस्यनसुद्धनि । न जसाशुद्धन
 त्रिनंदीगमनशुद्धनि ॥ ॥ ॥ नलिनवायानकंशसुद्धाय । यादूनवायानसिज
 लसुद्धाय । मानिकशुलकावमिसासुचिधाय । स्वसिद्धकनसुचिशला ॥ ॥
 यिदुबसुयं दद्यात् । मातुदं द्यामहानसं । गारुवा मसमंदद्यात् । स्वयमवकृषि

बुद्धं ॥ ८४ ॥ वदया कनान् अकयन् विद्वन् मामया केन हानस विद्वन् साया कनान्
यव समन विद्वन् थवक थमक विविद्यायाय ॥ ॥ कथिला कील यानन वाक्कली
गमनन न्ना वदो दल विद्या वेल सुदुद नन्न कं बुद्धं ॥ ८५ ॥ कथिल साया दूद यान
या दान् वाक्कली वा गमन या दान् वदया अरवन् विद्या न या दान् थवगाया कः
क्षं सुदुद नन्न कं स वान यिव ॥ ॥ बुद्धी हस्त नञ्ज उक् मा सम कनिन्न कं वी जिथ
मानो हव बुद्धा मृग हानं च जायता ॥ ८६ ॥ सुदया ला हानि न लक्षि मा न ल दवः

वाङ्मयशतसनां शिखरावशिखाश्च ॥ ॥ लीलहीना दुयानात्री च नहीनदु
 शोभनी वसुहीनमलंकाल विद्याहीनदूरीरुम ॥ ॥ लीलहीनमिसा धनमदश
 जन वसुधाधलनगियावचाढकं विद्यामसुव वाङ्मय धनसहस्रमहाकथाया ॥
 ॥ लीलहीनगलिचयधन ॥ लीलहीनदिववायिडा ॥ लीलहीनगयसायूकं चर्नं धूलया ॥ लीलहीनं
 ॥ ॥ लंखसुत्रादयधन ॥ लीलहीनं वाङ्मयशतसनां काननसहस्रं नयशकशतकावसु
 श धूलया दालदगडावसुश ॥ ॥ यक्षोत्सर्ववविद्याणां मूर्खानां कलहसुवां

[illegible]

हृदयितवायनसूर्यदहनयित्व किलधनं त्राजादहनमीव दधुनं वाक्कलद
 हलपीव नयनं ॥ **सनसाकं मृगं मांघं कत्रनमयिनंदमि** तर्ज्यादंककयः
 ५३ उल्यं गामांघरुदनं ॥ **१२** ॥ समस्तसाकं किलकया ला लाहाननलहियाधलि
 तालानवावूयाया धनं सयातदाव गामांघनयाव उल्यं वाक ॥ **नहयाल**
 मिदिदद्यात् रुतमाननदृश्यं नयसं कायत्रिथ्यं रुदमांसयुधिष्ठिरं ॥ **१३** ॥
 धमस्यायं मंगव कललयाव स्यात्तर्कं मंगव स्यादाख्यं मंगव धनं गामांघनं

५४

वलानयंगव हाडियुधिष्ठिरं वाजावं ॥ **नमांसहकलीदास तमद्यश्चरुतम**
 धनं यदुर्लभं वरुणानां निदुर्लभं मुमहारुलं ॥ **१४** ॥ लानयानदाधनमदसू
 खलानयानदाधनमदसू खोक्कलस्रहावद्यवहाव धयनिमनं नालनलसामरु
 रुललाक ॥ **॥ १५ ॥** सागवयं यं क थादथाय धीवीमिमा नखाय प्रायिया
 मांघ उल्यमनद्विद्वध्मा ॥ **१६** ॥ यित्व समूदहाव धीवीम गामं वा जान दान
 वियाव नित्रामासि शव उल्यधाय ॥ **॥ अग्निनामसि या मूर्ख सूर्य वाजकूलनि**

वा नित्यमवतनवाचनसुघयालहवालिमत् ॥ १७ ॥ अग्निलंखत्सु सुखसुघ
 वाजकलधनं क्रिथं डयववननं बालमाचक रुत ॥ ॥ ७ ॥ मांससुखावका
 वावाकं ननलदधि ॥ यशमं धनं निडा सुघयालहवानिमा ॥ १८ ॥ सुखलिला
 जिथमिसा सुधया सुधया सुधाकामयादान सुधं कलवया न तलुनने बालमाय
 वरुना ॥ ॥ सुधामोषा द्युतं नद्यात् या नमो को नशजनं डध्नादकननं काया
 सुघयालकवालिमत् ॥ १९ ॥ नकस्यादा नानक कायाधल बालकमु दूदवजा

३३

नयानमिसायागाजनकोयकाव वाचन थयूतान नदनयालननकश्यव
 ॥ ॥ अत्रादकगुलं यिष्ठं यिष्ठं दं कगुलं यथा ॥ न नदकगुलं मांस मासद
 कगुलं द्युता ॥ २० ॥ अत्रयागिनं द्यादगुल माध्र माध्र ॥ गन द्यादगुल दूद दूद
 यागिनं द्यादगुल लायागिनं द्यादनगुन धल ॥ ॥ यं नक्रि यविना न्यानि
 तर्हिलुख थयानन ॥ अत्रायनी चकामी च गुन दखि नथेयव ॥ १०० ॥ धडाक
 नीद्युनं नागरु यव श्री लालि अतिमाती नकाव कामी गुन दमि धयकं मः

०८ किं मां न सि नग
 धनं यमं न न न
 दधि ना ॥

धर्ममाय ॥ ॥ (गमहि विंशत्रयदधर्ममतिरिहस्य वादिहीनत्रय दानशील
 य सकृदि ४ धर्मयनमही ॥ ॥ ॥ सादक वाक्यदक वदस्यं सत्य वादी
 दक अलाहिदक दानसालदक धर्मसमानत यधिवाधत्रय वा वनय
 ॥ ॥ असात्रयिह संसात्र सात्रमंत उरुयं का धर्मसा ४ समीसं (गमं
 मम ४ लसुयजनं ॥ ॥ ॥ असात्रसंसात्र धर्मसा ४ सात्रदना च दूधवाक
 निवास सत्यत्रय संग साय नंमालंखन महादेव श्रीजायाय धर्मसा
 वेदता ॥ ॥ इति वानकसात्रसंयं हतीयः ४ नतः ४ समीक ॥ ॥

सं ३२५५ व ४५ ॥ विनायाक
 न धर्मसिंहवने ४ ॥



ASHA ARCHIVE

2502